



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण स्वास्थ्य के विकास में सामाजिक व सांस्कृतिक अवरोध

(जौनपुर जनपद के विकास खण्ड धर्मापुर के विशेष संदर्भ में)

(सम्बद्ध—वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

शोध निर्देशक

डॉ० संजय कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
सहकारी पी०जी० कालेज
मिहरावां, जौनपुर

शोध छात्र

संदीप कुमार
(एम.ए. एम.फिल., नेट)
समाजशास्त्र विभाग
सहकारी पी०जी० कालेज
मिहरावां, जौनपुर

शोध साहित्य सर्वेक्षण

भारत गांवों का देश है और यहां की लगभग 69% जनसंख्या गांवों में निवास करती है। आज देश की जनसंख्या लगभग 1.36 करोड़ हो चुकी है और वही दूसरी तरफ भारत जनसंख्या के मामले में विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश है। अगर इतिहास को देखते हैं तो भारत सदियों से गुलामी का दंश झेलता रहा है और तमाम विदेशी यहां आये और अपनी संस्कृति को इस देश में फैलाने का कार्य किया और प्रत्येक संस्कृति की अपनी-अपनी मान्यताएं, रीति-रीवाज और विश्वास है और इनके संयोग से एक मिश्रित संस्कृति का जन्म हुआ। इस प्रकार भारतीय संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति है।

यदि हम चिकित्सा पद्धति की बात करते हैं, तो देश में बहुत सारी चिकित्सा पद्धतियां प्रचलित हैं जैसे—एलोपैथिक, होमयोपैथिक, आयुर्वेदिक और यूनानी तथा अन्य चिकित्सा पद्धतियां। आजादी के बाद देश में चिकित्सा व्यवस्था का भी काफी विस्तार हुआ, प्राचीन समय में भी भारतीय चिकित्सा की व्यवस्था धर्म व सम्प्रदाय के आधार पर लोग करते थे, हिन्दू, आयुर्वेदिक, इस्लाम यूनानी पद्धति तथा इसाई एलोपैथिक।

देश को आजाद हुए भी 74 साल हो गए और सरकार ने देश के सामुदायिक विकास के लिए अब तक 13 पंचवर्षीय योजनाएं बनायी ताकि देश का समुचित विकास हो सके किन्तु इन योजनाओं के क्रियान्वयन में बहुत सारी बाधाएं हैं। क्योंकि इतनी बड़ी जनसंख्या, जनसंख्या की बहुलता, भौगोलिक पृथक्करण, अलग-अलग मत-मतांतर, शिक्षा का स्तर आदि सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में सबसे बड़ी बाधक रही है। किसी भी योजना के सफलता में सामाजिक पृष्ठभूमि का बहुत ही महत्व होता है।

चूंकि भारत गांवों का देश है और भारतीय गांव अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ है बल्कि अंधविश्वास और रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है। इसलिए ग्रामीण समाज में आज भी स्वास्थ्य से सम्बंधित समस्याएं विद्यमान हैं।

भारतीय ग्रामीण समाज:—

जहां तक भारतीय ग्रामीण समाज की बात है तो देखा जाय तो भारतीय संस्कृति यदि आज जीवित है तो यह भारतीय गांवों में ही देखने को मिलती है। ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय कृषि है और इसलिए ये प्रारम्भ से ही प्राकृतिक शक्तियों की पूजा-आराधना और विश्वास करते आये हैं क्योंकि इन प्राकृतिक शक्तियों (सूर्य, अग्नि, इन्द्र, पवन) से कृषि का घनिष्ठ सम्बंध रहा है, और कृषि के बिना ग्रामीण जीवन सम्भव नहीं है। परन्तु बढ़ते हुए समय ने इनके गूढ़ रहस्य को खो दिया और लोग इसे धर्म व अंधविश्वास व आत्मा के रूप में स्वीकार करने लगे। किन्तु आधुनिकता और विज्ञान ने इनके वास्तविक रहस्य को पुनः एक बार फिर खोज निकाला है। फिर भी ग्रामीण समाज रूढ़िग्रस्त और धार्मिक रीति-रिवाजों, धार्मिक अंध-विश्वासों, प्रतिमानों मूल्यों को आत्मसात किये हुए है। इसी कारण ये अच्छे व खराब स्वास्थ्य के लिए ईश्वर को ही जिम्मेदार मानते हैं और इसे देवी-देवताओं का रूष्ट होना क्रोध के रूप में मानते हैं। ग्रामीण समाज में तो कई बिमारियों के लिए प्रत्यक्ष देवी देवताओं का नाम भी बताया जाता है, और उसी बिमारी के अनुसार यज्ञ, पूजा, बलि, हवन एवं धार्मिक कृत्य करने का प्रावधान भी है, जिससे देवता प्रसन्न होकर अपने क्रोध से मुक्त कर दे।

ग्रामीण समाज में यह भी मान्यता होती है कि जीवन व मृत्यु तो ईश्वर के हाथ में है इसलिए वे रोगी को झाड़-फूक, ताबिज या भभूत पर ही विश्वास करते हैं क्योंकि इनका मानना है कि प्रत्येक मनुष्य का जीवन काल ईश्वर द्वारा निर्धारित होता है और ईश्वर के चाहने पर ही उसकी जीवन लीला समाप्त हो सकती है इसलिए ये रोगी को चिकित्सक के पास ले जाना भी उचित नहीं समझते।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ग्रामीण समाज का सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर उनके स्वास्थ्य पर बड़ा ही प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

स्वास्थ्य:-

स्वास्थ्य एक व्यक्ति के शारीरिक, सामाजिक कल्याण को दर्शाता है, दूसरे शब्दों में बीमारी व दुःख दर्द से मुक्ति की अवस्था ही स्वास्थ्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सन् 1948 में इसे व्यापक रूप से परिभाषित किया है, जिसके अनुसार स्वास्थ्य का अर्थ बीमारी या कमजोरी का न होना ही नहीं है बल्कि शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कल्याण की पूर्ण अवस्था ही स्वास्थ्य है। इस प्रकार व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को भी स्वास्थ्य का अविच्छिन्न अंग माना गया है किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उसके सामाजिक वातावरण, सामाजिक स्तर एवं मनोरंजन की विधियों का गहरा सम्बंध होता है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में भी इसी प्रकार कहा गया है कि स्वस्थ व्यक्ति वह है जिसके शारीरिक व मानसिक क्षमताओं का विकास हो। इस प्रकार व्यक्ति का अपने पर्यावरण के साथ पूर्ण रूप से सामाजिक व शारीरिक समायोजन ही स्वास्थ्य है। कभी-कभी व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ होता है, किन्तु उसकी सामाजिक गतिविधियां समाज के अनुकूल नहीं होती ऐसे में व्यक्ति को स्वस्थ नहीं कहा जाता है इस प्रकार व्यक्ति का दोनो स्तरों से स्वस्थ होना नितांत आवश्यक है। शारीरिक व मानसिक और इसके लिए व्यक्ति का सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पूर्णतः उत्तरदायी होती है।

वैयक्तिक स्वास्थ्य:-

व्यक्तिगत स्वास्थ्य की आधारशिला किसी भी राज्य के सामाजिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है, इसलिए राज्य का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपने नागरिकों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे, और स्वास्थ्य कि अच्छी-अच्छी योजनाएं बनाये, जिससे व्यक्तिगत स्तर पर स्वास्थ्य में सुधार किया जा सके और इससे स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा। दूसरी बात कि व्यक्ति के खराब स्वास्थ्य के लिए कौन जिम्मेदार है और इसमें किस की अहम भूमिका होती है, स्वयं व्यक्ति का या उसके समाज या सरकार की इस बिन्दु पर हम किसी एक को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते क्योंकि सरकार या समाज का काम योजनाओं को बनाना होता है, किन्तु योजनाओं का क्रियान्वयन तो व्यक्ति को स्वयं करना होता है अगर हम इसे वैयक्तिक स्तर पर देखते हैं तो हमें पता चलता है कि व्यक्तिगत स्वास्थ्यता की व्यक्ति की स्वयं कि जिम्मेदारी है

और वह इसके लिए स्वयं सजग व प्रयत्नशील रहे, जैसे—समय से भोजन करना, संतुलित भोजन, भरपूर नींद लेना या विश्राम करना, समय से सोना और समय से उठना, व्यायाम तथा धूम्रपान व नशीले पदार्थों के सेवन से बहिष्कार इत्यादि, और दूसरी तरफ सरकार द्वारा किये गए प्रयासों या योजनाओं का व्यक्ति लाभ उठाये जिससे व्यक्ति व उसका परिवार स्वस्थ रहे जिससे एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो सके, क्योंकि बिमारियों के विरुद्ध केवल चिकित्सक नहीं लड़ सकता इसके लिए हमें स्वयं प्रयत्नशील होना होगा।

व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए व्यक्ति की सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का भी बहुत बड़ा योगदान होता है क्योंकि व्यक्ति उसी के अनुरूप स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होता है।

बीमार व्यक्ति और उसका व्यवहार:—

बीमार व्यक्ति वह होता है जो समाज द्वारा निर्धारित भूमिका का प्रतिपादन करने में शारीरिक व मानसिक रूप से असमर्थ होता है, और वह भूमिका व्यक्ति की चाहे स्वयं के प्रति हो, परिवार, समाज या समुदाय के प्रति हो इससे व्यक्ति स्वयं दूसरों की ओर से निराश होता है और दूसरे उसके प्रति उदासीन होते हैं। इससे व्यक्ति का व्यवहार समाज व परिवार में संतुलित नहीं रह पाता और सामाजिक गतिविधियाँ सुचारु रूप से नहीं चल पाती और समाजोन्मुख उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती है।

अतः इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति स्वस्थ रहे और उसका स्वास्थ्य उत्तम रहे, जिससे वह समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं का पालन कर सके, प्राचीन काल से ही हमारे देश में कई चिकित्सा की पद्धतियाँ रही है पर वर्तमान समय में चिकित्सकीय सुविधाओं से काफी विकास हुआ है इसका व्यक्ति लाभ ले और स्वस्थ रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:—

- (1) वर्ल्ड बैंक युनाइटेड स्टेट सेंसस ब्यूरो 2019
- (2) प्लानिंग कमीशन गवर्नमेंट आफ इण्डिया
- (3) सोशल मेडिसीन, प्रकाशक सुधा श्रीधर, W.H.O. 1948 Quoted by श्रीधर राव A-4, J.N. Medical College Quarters 1976.
- (4) आरोग्य संजीवनी मासिक पत्रिका, मार्च 2020
- (5) राम आहूजा सामाजिक समस्यायें
- (6) योजना सितम्बर 2018